श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : ५

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ शहर Answer Sheet 2021-22

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	श्रमणसंघ
(२)	आगम
(३)	अज्ञान
(४)	शासनदेवी
(५)	उत्कृष्ट
(६)	शांतिनाथ
(७)	सूक्ष्म लोभ
(८)	उपदेश।
(९)	एकेन्द्रीयो को
(१०)	सुखशिलता
(११)	चतुर्गतिमय
(१२)	सोमचंद्र
(१३)	आठवे
(१४)	चक्षुदर्शन
(१५)	~~ओम~~ भूमंडल
(१६)	~~अचलगच्छ~~ योग
(१७)	अचलगच्छ
(१८)	विद्यासिद्ध
(१९)	वेजप
(२०)	मृत्यु

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	त्रेसठ।
(२)	उपशम श्रेणी
(३)	भूमंडल
(४)	वडगच्छ
(५)	पेरु
(६)	ज्ञान
(७)	गौड देश।
(८)	क्रिया
(९)	"सर्वार्थसिद्ध"
(१०)	स्थावर
(११)	बृहद्शांती
(१२)	विरति
(१३)	राजहंस
(१४)	श्री उपाध्याय विनयचंद्रजी
(१५)	मिथ्यादृष्टि
(५)	राजहंस
(६)	देवेन्द्र
(७)	किंलान्दिय
(८)	कहा है
(९)	दोबार
(१०)	काल करे तो
(११)	तीन
(१२)	इन्द्र
(१३)	घाता है
(१४)	मोक्ष
(१५)	राजाओ
(१६)	सुर्य
(१७)	सोलह
(१८)	इच्छित स्थान
(१९)	नीचे
(२०)	दो द्वीपिट

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	मनुष्य
(२)	आनंद
(३)	गर्भज
(४)	दुसरे

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	10
(२)	१	(७)	2
(३)	९	(८)	४
(४)	८	(९)	५
(५)	3	(१०)	७

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१२
(२)	४
(३)	६
(४)	४
(५)	४
(६)	८
(७)	२
(८)	८ ~~[illegible]~~ / ~~1,25000~~
(९)	१,२५०००
(१०)	५

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	20
(२)	✓	(२)	७
(३)	×	(३)	४
(४)	×	(४)	१३
(५)	✓	(५)	५
(६)	×	(६)	११
(७)	×	(७)	१२
(८)	✓	(८)	१६
(९)	×	(९)	20
(१०)	×	(१०)	११

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. उपशम श्रेणी : पूर्वगत श्रुतज्ञान को धारण करनेवाला अतिचार रहित चारित्र को पालन करनेवाला पहले तीन संघयण मेसे कोई एक संघयण युक्त ऐसे साधु महात्मा उपशम श्रेणी पर आरुढ हो सकते है उपशम श्रेणी वाला साधक काल करे तो कहा जा सकता है मृत्यु जीवन की वास्तविकता है वह कभी भी आकर उपस्थित हो सकता है मोक्षप्राप्ती के नजीक पहुँचे हुए साधक के समक्ष आकर उसके संसार की वृद्धि कर सकता है जो साधु अल्प आयु वाला है और उपशमश्रेणी पर आरुढ हुआ है और तब काल करे तो "अहमिन्द्र" याने सार्वार्थसिद्ध देवलोक मे जाता है प्रथम वज्रऋषभनाराच संघयण वाले मोक्ष तक जाते है

२. ज्ञान और क्रिया मोक्ष : ज्ञानी जब जब ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्ष बताते है तब तब ज्ञान का अर्थ आत्मस्वरुप सन्मुख ज्ञान दर्शन रुप उपयोग का प्रवर्तन जानना, इसी तरह क्रिया यानी आत्मस्वरुप की ओर वीर्य की प्रवृती। हमारा जीवन मोक्ष के सम्मुख है या संसार सम्मुख है यह जानने हमारा स्वयं के उपयोग का निरीक्षण करना आवश्यक है। उपयोग कहा जाता है। कहा स्थिर है किसमे लयलीन है कौनसी और कैसी क्रियाओ मे वीर्य उल्लसीत होता है ? इन सारे प्रश्नो का जवाब हमारे जीवन की दिशा बतादेने मे समर्थ है। जैसे जैसे आत्मोपयोग की लीनता ज्ञानदर्शन व चारित्र बढती जायेगी वैसे वैसे परभाव का त्याग होता जायेगा विभावदशा घटती जायेगी और स्वभावदशा स्वरुप रमणता बढती जायगी

३. → शासनदेवी के स्वप्नानुसार देवी को गर्भ रहा उस रात देवी ने स्वप्न मे गाय के दुध का पान किया शुभ शकुन से जन्मे बालक का नाम गोदुहकुमार रखने मे आया, बालक तेजस्वी, चकोर एवं होशीयार था। माता के पास से ज्ञान एवं संस्कार पाता बालक पांच बरस का हुआ - इसी समय फिर सुरजदेवी का आगमन हुआ मातापीता के साथ वंदन करने गया बालक देवी संकेतानुसार दोडकर गुरु के आसन पर बैठ गया। जैनधर्म मे प्रवेश कर गये शिथिलाचार को दूर कर के सच्चे पंथ की पुनः स्थापना करेगा, इन विचारे से अत्यंत उत्साहित हुए मातापिता ने बालक को भावभीनी विदाई दी।

४. दृष्टी याने पदार्थ को समझने की और स्वीकार करने की अपनी मान्यता या झुकाव दृष्टि तीन प्रकार की होती है। मिथ्यादृष्टि २) सम्यगदृष्टि ३) मिश्रदृष्टी, मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से परमात्मा के वचनों पर श्रद्धा नही आती वह मिथ्यादृष्टि है। मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उपशम, क्षयोपशम अथवा क्षय से परमात्मा के उपर श्रद्धा और आचरण में ला सके या न ला सके परंतू परमात्मा के वचनों में संपूर्ण श्रद्धा होती है वह सम्यगदृष्टि है। परमात्मा के वचनों मे श्रद्धा भी न हो और अश्रद्धा भी न हो वह मिश्रदृष्टि है।

५. सोमचंद्रमुनि - संयम जीवन पाकर अप्रमत्त बन आराधना करने लगे। चौदहपूर्वी महात्माओ का जीवन चरित्र पढ सुनकर ऐसा ज्ञानी बनने के भव जगे। इसके लिए उन्होंने कश्मीर जाकर श्रुतदेवी के आराधना का संकल्प किया, गुरुभगवंत से आज्ञा मांगी, गुरुदेव ने एक संघाटक सहायक मुनि साथ मे देकर आज्ञा दी। खंभात से प्रथम विहार मे ही उज्जयंतावतार नामक जिनालय मे प्रभू नेमिनाथजी भगवंत की प्रतिमा के समक्ष रात के अखंड छः घंटे के सरस्वती के ध्यानमात्र से देवी प्रसन्न हो गए।